

ध्यानप्रक्रिया संधि / स्थावर जंगम संधि

हरिकथाम्-इतसार गुरुगळ
करुणादिंदापनितु पेळुवे
परम भगवद्भक्तरीदनादरदि केळुवुदु

पादुकेय कंटक सिकत मोद
लादुवनुदिन बाधिसुववे
कादशेंद्रियगळलि बिडदे हइषीकपन मूति
सादरदि नेनेववनु ऐनप
राधगळु माडिदरु सरियेनि
रोधगैसवु मोअमागके दुरितराशिगळु ११-१

हगल नंदादीपदंददि
निगमवेद्यन पूजिसुत कै
मुगिदु नाल्करोळोंदु पुरुषाथवनु बेडदलि
जगदुदर कोट्टुदनु भुंजिसु
मग मडदि प्राणेंद्रियात्मा
दिगळु भगवदधीनवेंदडिगडिगे नेनेवुतिरु ११-२

अस्वतंत्रनु जीव हरि स

वस्वतंत्रनु नित्य सुखमय
निःस्वबद्धाल्पजन्शक्त सदुःखि निवीण्ण
हस्वदेहि सनाथजीवनु
विश्वव्यापक कतइब्रह्म स
रस्वतीशाद्यमरनुत हरियेंदु कौंडाडु ११-३

मत्ते विश्वाद्येंदु रूपों
भत्तरिंदलि पेच्चिसलु ए
प्पत्तेरडु रूपगळहवु ओंदोंदे साहस्र
पड्थपड्थकु नाडिगळोळगे स
वोत्तमन तिळियेंदु भीष्मनु
बित्तरिसिदनु धम तनयनिगे शांतिपवदलि ११-४

एंदु प्रकइतिगळोळगे विश्वा
द्येंदु रूपदलिदु भकुतर
कंटकव परिहरिसुतलि पालिसुव प्रतिदिनदि
नेंटनंददि एडबिडदे वै
कुंठरमणु तन्नवर नि
ष्कंटक सुमागदलि नडेसुव दुजनर बडिवा ११-५

स्वरमणनु शक्त्यादिरूपदि

करुण मानिगळोळगे नेलेसि
द्वर विदूरनु स्थूलविषयगळुंडुणिप नित्य
अरियदले तानुंबेनेंबुव
निरयगळनुंबुवनु निश्चय
मरळि मरळि भिवाटविय संचरिसि बळलुवनु ११-६

सुरुचि रुचिर सुगंध शुचियें
दिरुतिहनु षड्रसगळोळु ह
न्नेरडु रूपदलिप्प श्री भू दुगोयर सहित
स्वरमणनु एप्पत्तेरडु सा
विर समीरन रूपदोळगि
दुरु पराक्रम कतइ एनिसुव नाडिगळोळिदु ११-७

निन्न सवत्रदलि नेनेवव
रन्यकमव माडिदरु सरि
पुण्यकमगळेनिसुववु संदेहविनितिल्ल
निन्न स्मरिसदे स्नान जप हो
मान्न वस्त्रगजाश्व भू धन
धान्य मोदलादखिळ धमव माडि फलवेनु ११-८

इष्टभोज्य पदाथदोळु शिपि

विष्टनामदि सव जीवर
तुष्टिपडिसुव दिनदिनदि संतुष्ट तानागि
कोष्टदोळु नेलेसिद्दु रसमय
पुष्टियैदिसुतिंद्रियगळोळु
प्रेष्टनागिद्वेल्ल विषयगळुंब तिळिसदळे ११-९

कारणाव्हय (कारकाव्हय) जॅनान कम
प्रेरकनु तानागि क्रियेगळ
तोरुवनु कमेंद्रियाधिपरोळगे नेलेसिद्दु
मूरुगुणमय द्रव्यग तदा
कार तन्नामदलि करेसुव
तोरिकोळ्ळदे जनर मोहिप मोह कल्पकनु ११-१०

द्रव्यनेनिसुव भूतमात्रदो
ळव्यनु कमेंद्रियगळोळु
भव्य सत्क्रियनेनिप जॅन्यानेंद्रियगळोळगिद्दु
स्तव्य कारनेनिसि सुखमय
सेव्य सेवकनेनिसि जगदोळु
हव्यवाहननणियोळगिप्पंते इरुतिप्प ११-११

मनवे मोदलादिंद्रियगळोळ

गनिलदेवनु शुचियेनिसिकों
डनवरत नेलेसिप्प शुचिशद्धोतनेंदेनिसि
तनुविनोळगिप्पनु सदा वा
मन हइषीकेशाख्यरूपद
लनुभवके तंदीव विषयज सुखव जीवरिगे ११-१२

प्रेरक प्रेयरोळु प्रेय
प्रेरकनु तानागि हरि नि
वैरदिंद प्रवतिसुव तन्नाम रूपदलि
तौरिकोळ्ळदे सवरोळु भा
गीरथीजनकनु सकल व्या
पारगळ ता माडिमाडिसि नोडि नगुतिप्प ११-१३

हरिये मुख्यनियामकनु एं
दरिदु पुण्यापुण्य हरुषा
मरुष लाभालाभ सुखदुःखादि द्वंद्वगळ
निरुत अवनंघ्रिगे समपिसि
नरकभूस्वगापवगदि
करण नियामकन सवत्रदलि नेनेवुतिरु ११-१४

माणवक तत्फळगळनुसं

धानविल्लदे कमगळ स्वे
च्छनुसारदि माडि मोदिसुवंते प्रतिदिनदि
जानानपूर्वक विधिनिषेधग
लेनु नोडदे माडु कमप्र
धान पुरुषेशनलि भकुतिय बेडु कोंडाडु ११-१५

हानिवइद्धि जयापजयगळु
ऐनु कोट्टुदु भुंजिसुत ल
मीनिवासन करुणवने संपादिसनुदिनदि
जानानसुखमय तन्नवर पर
मानुरागदि संतैप दे
हानुबंधिगळंते ओळहोरगिदु करुणाळु ११-१६

आ परम सकलेंद्रियगळोळु
व्यापकनु तानागि विषयव
ता परिग्रहिसुवनु तिळिसदे सवजीवरोळु
पापरहित पुराण पुरुष स
मीपदलि नेलेसिदु नाना
रूपधारक तोरिकोळळदे कमगळ माळप ११-१७

खेचररु भूचररु वारि नि

शाचररोळिद्धवर कमग
ळाचरिसुवनु घनमहिम परमाल्पनोपादि
गोचरिसनु बहु प्रकारा
लोचनेय मादिदरु मनसिगे
कीचकारि प्रीय कविजन्गोय महराय ११-१८

ओंदे गोत्र प्रवर संध्या
वंदनेगळनु माडि प्रांतके
तंदे तनयरु बेरे तम्मय पेसरुगोंबंते
ओंदे देहदोळिद्धु निंद्या
निंद्यकमव माडि माडिसि
इंदिरेशनु सव जीवरोळीशनेनिसुवनु ११-१९

किट्टगट्टिद लोह पावक
सुट्टु विंगड माडुवंते घ
रट्ट व्रीहिगळोळिप्प तंदुल कडेगे तेगेवंते
विट्टला एंदोम्मे मैमरे
दट्टहासदि करेये दुरितग
ळट्टुळिय बिडिसवन तन्नोळगिट्टु सलहुवनु ११-२०

जलधियोळु स्वेच्छानुसारदि

जलचर प्राणिगळु तत्तत
स्थळगळलि संतोषबडुतलि संचरिसुवंते
नळिननाभनोळब्जभव मु
प्पोळुलुरिग मैगण्ण मोदला
धलवु जीवर गणवु वतिसुतिहदु नित्यदलि ११-२१

वासुदेवनु ओळहोरगे अव
काशदनु (आभासकनु) तानागि बिंब प्र
काशिसुव तद्रूप तन्नामदलि सवत्र
ई समन्वयवेंदेनिप सदु
पासनव गैववनु मोआ
पेएगळोळुत्तमन जीवन्मुक्तनवनियोळु ११-२२

भोग्यवस्तुगळोळगे योग्या
योग्य रसगळनरितु योग्या
योग्यरलि नेलेसिप्प हरिगे समपिसनुदिनदि
भाग्य बडतन बरलु हिग्गदे
कुग्गिसोरगदे सद्भकुति वै
राग्य ज~नान बेडु नी निभाग्यनेनिसदले ११-२३

स्थळ जलाद्रिगळल्लि जनिसुव

फल सुपुष्पज गंधरस श्री
तुळसि मोदलादखिळ पुजासाधन पदाथ
हलवु बगेयिंदपिसुत बां
बोळेय जनकगे नित्य नित्यदि
तिळिवुदिदु व्यतिरेक पुजेगळेंदु कोविदरु ११-२४

श्रीकरन सवत्रदलि अव
लोकिसुत गुणरूपक्रिय व्यति
रेक तिळियदलन्वयिसु बिंबनलि मरेयदले
स्वीकरिसुवनु करुणदिंद नी
राकरिसदे कइपाळु भक्तर
शोकगळ परिहरिसि सुखवित्तनवरत पोरेव ११-२५

इनितु व्यतिरेकान्वयगलें
देनिप पूजाविधानगळने तिळि
दनिमिषेशन तइप्ति बडिसुतलिरु निरंतरदि
घन महिम कैकोंडु स्थितिमइति
जनुमगळ परिहरिसि सेवक
जनरोळिद्वानंद पडिसुव भक्तवत्सलनु ११-२६

जलजनाभनिगेरेडु प्रतिमेग

ळिळैयोळगे जडचेतनात्मक
चलदोळीबगे स्त्री पुरुष भेददलि जडदोळगे
तिळिवुदाहितप्रतिमे सहजा
चलगळेंदीबगे प्रतीकदि
ललित पंचत्रय सुगोळकवरितु भजिसुतिरु ११-२७

वारिजासन वायु वींद्र उ
मारमण नाकेश स्मरहं
कारिक प्राणादिगळु पुरुषर कळेवरदि
तोरिकोळदनिरुद्ध दोष वि
दूर नारायणन रूप श
रीरमानिगळगि भजिसुत सुखव कोडुतिहरु ११-२८

सिरि सरस्वति भारती सौ
पणि वारुणि पावतीमुख
रिरुतिहरु स्त्रीरोळगभिमानिगळु तावेनिसि
अरुण वण निभांग श्री सं
करुषण प्रद्युम्न रूपग
ळिरुळु हगलु उपासनव गैवुतले मोदिपरु ११-२९

कइतप्रतीकदि तंकि भागव

हुतवहानिल मुख्य दिविजरु
तुतिसिकोळुतभिमानिगळु तानागि नेलेसिद्धु
प्रतिदिवस श्रीतुलसि गंधा
अते कुसुम फल दीप पंचा
मइतदि पुजिप भकुतरिगे कोडुतिहरु पुरुषाथ ११-३०

नगगळभिमानिगळेनिप सुर
रुगळु सहजाचलगळिगे मा
निगळेनिसि श्री वासुदेवन पूजिसुतलिहरु
स्वगतभेद विवजितन नाल
बगे प्रतीकदि तिळिदु पुजिसे
विगत संसाराब्धि दाटिसि मुक्तरनु माळप ११-३१

आवऐत्रके पौदरेनि
न्नाव तीथदि मुणगलेनि
न्नाव जपतप होम दानव माडि फलवेनु
श्रीवर जगन्नाथ विठलन
ई विधदि जंगम स्थावर
जीवरोळु परिपूणनेंदरियदिह मानवरु ११-३२